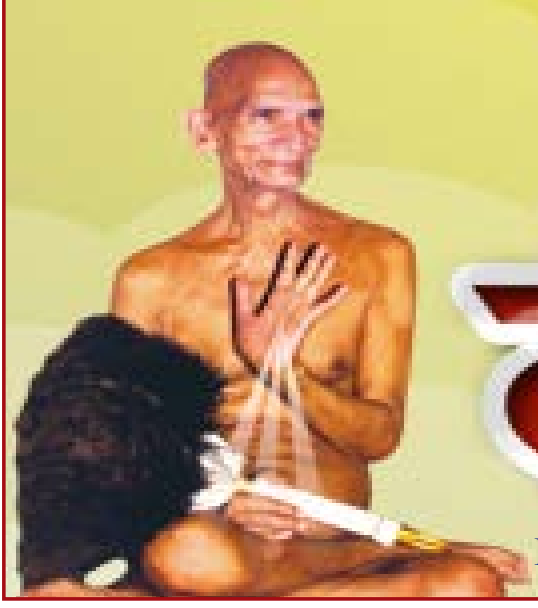

Issue: 139
25 August 2020
www.jainachar.com Daily

जैनाचार

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

दशलक्षण पर्व का माहात्म

अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्यसागरजी महाराज

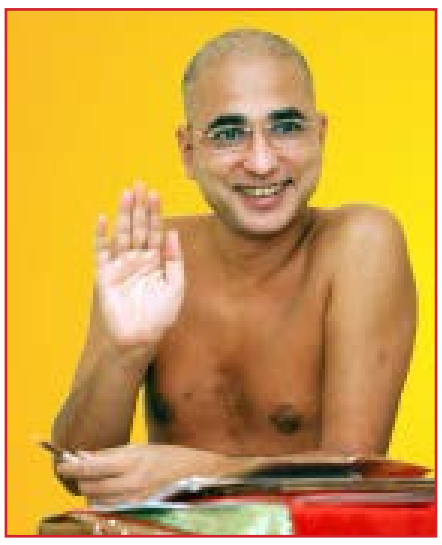

पर्व शब्द में असाधारण हैं। इसमें दिव्यता है। देवत्व है। इसके माहात्मय को समझना जरूरी है। आइये, पहले हम इस शब्द के बारे में जानते है। पर्व दो प्रकार के होते हैं। पहला-तात्कालिक। दूसरा-त्रैकालिक। तात्कालिक पर्व व्यक्ति विशेष या घटना विशेष से संबंधित होते है। जबकि त्रैकालकि शाश्वत पर्व है। यह न तो किसी व्यक्ति विशेष या घटना विशेष से संबंधित होते है, बल्कि इसका सबंध आध्यात्मिक भावों से है। पर्युषण पर्व त्रैकालिक शाश्वत पर्व है। इस पर्व का दूसरा नाम दशलक्षण महापर्व भी है।

अर्थात जो सर्वतः पापकर्मो को जलाता है, पाप क्षय कर आत्मा धर्मो को उद्घातित करता है, आत्म गुणों को प्रकट करता है उसे पर्युषण कहते है। पर्व का अर्थ-गांठ ग्रंथि है, जो कषाय, मोह आदि रूपी गांठ को खुलने की कला सिखाता है, उसे पर्युषण पर्व कहते है।

उत्तम क्षमा आदि दस धर्म है। दस दिनों तक धर्म के दस लक्षणों की चर्चा होती है, इसलिये इसे दशलक्षण पर्व कहते है। दशलक्षण पर्व आध्यात्मिक पर्व है। मूल बात यह है कि दशलक्षण आत्मा के लक्षणों से परिचित कराने का पर्व है। इस पर्व के आते ही आठ साल के बच्चे से लेकर ८० साल के बुजुर्ग के ह्रदय में पूजन, अभिषेक, उपवासा आदि के प्रति उत्साह होता है। यह पर्व त्याग, संयम, तप, जाप, ध्यान, वैराग्य को बढ़ानेवाला है। दशलक्षण पर्व शरीर को नहीं, आत्मा को संवारने का पर्व है। इंद्रियों को वश में करने का पर्व है। शत्रुओं पर विजय पाने के लिए ट्रेनिंग सेंटर हैं-दशलक्षण पर्व। दशलक्षण पर्व श्रावकों के लिए मुनि धर्म समझने की पाठशाला के समान है। आत्म का अनुभव करवाने वाला है दशलक्षण पर्व।

आत्म प्रक्षालक : दशलक्षण पर्व

प.पू. गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी

उत्तम आर्जव: वो क्या शक्ति हैं जो आर्जव गुण पर आवरण डाले हुए हैं, आखिर हमारे स्वाभाविक गुण को हमसे किसने छीना, वह है मन, वचन, काय त्रियोगों की वक्रता, यदि परिणामों में योग वक्रता के स्थान पर योग सरलता आ जाए तो आर्जव गुण कहीं दूर नहीं। मन में हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सो करिये।

जो चिंतेइ ण वंकं ण कुणदि वंकं ण जंपदे वंकं।
ण गोवदि णियदोषं अज्जव धम्मो हवे।

अर्थात् जो मन, वचन, काय रूप कुटिलता के कार्य नहीं करता वह दोषों को नहीं छिपाना आर्जव धर्म है। ऋजुभाव युक्त निर्मल मन सत्य विचारों के, सत्य ज्ञान के, अनंत संभावनाओं के, अनंत युगों के बंदक द्वार खोल देता है, दूसरी ओर यही मन वक्रता कुटिलता से समस्त यातनाओं का द्वार है। असत्य विचारों, अनिष्ट भावनाओं का जन्म दाता है। **माया तैर्यग्योनस्य** अर्थात् मायाचारी करने से तिर्यन्च पर्याय की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत जो व्यक्ति जीवन में सरलता व ऋहुता को अपनाता है वह सबका प्रिय बन जाता है तथा सुगति को प्राप्त करता है, धोखा कभी फलिभूत नहीं होता, दूसरों को धोखा देनेवाला स्वयं ही धोखा खा जाता है। इसलिये हमारा जीवन एकदम निश्चल और सरल होना चाहिए। हमारी प्रीति निःस्वार्थ होनी चाहिए। जिस दिन-यह सरलता हमारे अन्दर आ जायेगी उसी दिन हमारे जीवन में धर्म का आनन्द बरसने लगेगा। अतः हम सभी अपने को ऋजुता से श्रृंगारित कर आत्म कल्याण के पथ को प्रशस्त करें, इसी भावना के साथ बोलिये उत्तम आर्जव धर्म की जय!!

आरूषि को जन्मदिन की शुभकामनाएं

लाडली बिटिया कुल में आई
चारों ओर खुशियां फैलाई
हर कोई स्नेहिल नैन निहारे
सबकी आंखों के तारे
नाम करो रोशन जग में
रुको नहीं कभी जीवन पग में
तुम्हें आगे बढ़ते जाना है
कभी किंचित नहीं घबराना है
हमारी यही दुआ है रब से
श्रेष्ठ बनोगी तुम सब से
जन्मदिन पर मंगल कामना

पूर्ण हो तुम्हारी हर मनोकामना, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ तुम्हारे
नाना-नानी, मामा-मामी, मम्मी-पापा, प्रियांशी, दीपांश, जिया, दीपल, यशि, अक्षीता

fHk.M@dkMjek&iT; t/u efu x.kkpk;l 108 Jh fojkx lkxj th egkjkt mÙke ekn/o èke/ ij C;k[;ku djr/ go/

मार्दव भावों की मयुता का नाम हीं मार्दव धर्म है यानि शरीर से झुकने मात्र का नाम मार्दव धर्म नहीं है। संसार में प्राय. शरीर से झुकने वालो की अपेक्षा मन से झुकने वाले कम मिलते हैं। दो व्यक्तियों के बीच होने वाले विवाद में एक के कमजोर पढ़ने पर भी व्यक्ति कहने लगता है हाथ जोड़े भैया बात बंद करो यहां से जाओ। ऐसा व्यक्ति बाहर सेतु हाथ जोड़ लेता है लेकिन उसके प्ररियाम या भाव हाथ जोड़ने के नहीं होते कहते हैं....

नमन नमन में फेर है अध्यक्ष नमें नादान
दगाबाज दूंगा नमें चीता चोर कमान

सामान्य रूप से व्यक्ति जितना झुकता है उससे दुगुना दगाबाज अपना कार्य सिद्ध करनी के लिए झुक जाता है और चीता चोर भी कार्य सिद्धि हेतु जाते हैं। लेकिन यहां परिणामों से झुकने को धर्म कहां है और यह धर्म वचनों से नहीं होता प्रातः व्यक्ति वचनों से तो क्षमा मांग लेता है किंतु ह्रदय नमः न हों तो झुकता व्यर्थ है। धर्म के लिए विनय भाव का होना आवश्यक है और विनय से मान नष्ट होता है। भारत देश में अन्य देशों की अपेक्षा अधिक मात्रा में भगवान के मंदिर तीर्थ क्षेत्र आदि है क्योंकि मंदिर भगवान गुरु आदि ऐसे स्थान है, जहां से व्यक्ति झुकता सीखता है। कभी-कभी बच्चे मंदिर से जींस आदि ऐसे कपड़े पहनकर आते हैं जिनसे उन्हें बैठने में परेशानी होती है और बे खड़े ही सिर झुका लेते हैं यानि उन्होंने बैठने में परेशानी होती है और खड़े ही सिर झुका लेते हैं। उन्होंने अभी धर्म की भगवान की कींमत नहीं की है। मांग लीजिए गुरु तो फिर भी आशीवाद दे देंगे किन्तु ध्यान रखना बिना झुके आज तक किसी की बाल्टी नहीं भरी। मार्दव धर्म एक और खाली होने की और दूसरी ओर भरने की शिक्षा देता है यानि आप कषाय अहंकार राग दूबेष मोहे के कचरे को खाली कर दीजिए क्योंकि यह हमारे धर्म के विनाशक है। और स्वयं की गलतियों को देखने का प्रयास करें व संभलने की ओर अपने कदम बढ़ाये। संसार में अहमेद ममेद ये दो ही आत्मा को रवभाव से युक्त करने वाले झगड़े को बढ़ाने वाले हैं। इस इनको दूर कर दो तो भगवत स्वरूप आत्मा का इसावरदान अनुभूति हो सकती है जो आपके जीवन को सुख शांति प्रदान करने वाली है।

अतः हम मार्दव धर्म का आशय लेकर अपने जीवन को सार्थक करें उक्त जानकारी कोडरमा के राज कुमार अजमेरा, नवीन गंगवाल ने दी।

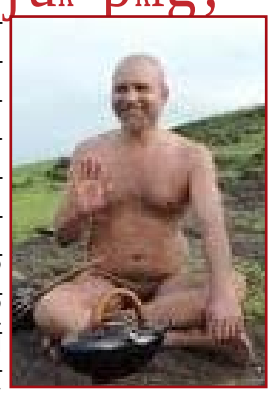

ge/ lHkh çdkj d/ vgdkj dk NkM+dj mÙke ekn/o èke/ dk ikyu djuk pkfg,

मुनि श्री निर्णय सागर जी महाराज ने धर्म सभा को संबोधित करते हुये कहा की भारत देश अनादिकाल से ऋषि मुनियो का देश रहा है। इन्ही ऋषियो मुनियो की परंपरा मे विक्रमादित्य की शताब्दी के शुरू में जैन जगत के एक प्रकांड विद्वान आचार्य समंतभद्र स्वामी हुये। उन्होंने न्याय सिद्धांत ग्रंथो के साथ श्रावकाचार ग्रंथ की रचना की है। इस ग्रंथ में उन्होने कहा जो मानी घमंडी हो दुसरे का तिरस्कार करता है वह अपनी आत्मा का तिरस्कार करता है क्योकि धर्मात्मा के बिना धर्म नहीं होता कहा भी है। ना धर्म और धार्मिक बिना इसीलिये किसी को मान नहीं करना चाहिये। उत्तम मार्दव धर्म की व्याख्या करते हुये मुनि श्री ने कहा हमें सभी प्रकार के अहंकार को छोड़कर उत्तम मार्दव धर्म का पालन करना चाहिये। इसी से आत्मा परमात्मा बनती है प्राक्रत भाषा में मान को खाई बोलते है और मोक्षमहल मे यदि प्रवेश करना है तो खाई को समाप्त करके मोक्ष महल मे पहुच सकते है। संकलन अभिषेक जैन लुहाड़ीया रामगंजमंडी

चंदनजी को जिनधर्म ने गोद लिया था

बीतनेवाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा, इस धरा का इस धरा पर धरा ही रह जायेगा।
जिंदगी भर का कमाया साथ ना जायेगा, यह सयअवसर खो दिया तो अंत में पछतायेगा।।

ज्ञानियों! आज का अवसर चंदनमलजी कोटिया जिनकी जिनभक्ति, गुरू भक्ति अद्‌भूत थी पर अंत में पुरूषार्थ कम कर पाये। केसरीमलजी के साथ जुड़ कर सारी संपत्ति बगवास तीर्थ पर लगा दिया। वंश चलानेवाला अंश नहीं था फिर भी कोई बच्चा गोद नहीं लिया पर चंदनजी को जिनधर्मने गोद में ले लिया।

कल तक स्वस्थ थे, अब वे दूसरी गति में, उत्तम गति में जा विराजे। इस घटना से सिख मिलती है कि शरीर नश्वर है, समय रहते-रहते अपने धन का, समय का सदुपयोग कर ले। चंदनजी कोटिया नाम की तरह थे। चंदन जैसी धर्म की खुश्बू सबको देकर गये। चंदनजी बहुत ही शांत प्रकृति के मानव थे।